



# कार्यालय प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय गुरुर

(पूर्व नाम – शासकीय नवीन महाविद्यालय गुरुर)

जिला – बालोद, छ.ग, भारत

Ph No : 07749 – 265461 Email : [gururgovernmentcollege@gmail.com](mailto:gururgovernmentcollege@gmail.com) Website : [www.gcgurur.org.in](http://www.gcgurur.org.in)

## आदर्श वाक्य (Motto)

**विद्यां ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।  
पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मं ततः सुखम्॥**

### हिन्दी भावार्थः

विद्या विनय देती है, विनय से पात्रता आती है, पात्रता (योग्यता) से धन आता है, धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है।

### इतिहासः

महाविद्यालय के आदर्श वाक्य को नीतिशास्त्र “हितोपदेश” के श्लोक 6 से लिया गया है। हितोपदेश के रचयिता “नारायण पण्डित” हैं। हितोपदेश भारतीय जन-मानस तथा परिवेश से प्रभावित उपदेशात्मक कथाएँ हैं। हितोपदेश की रचना का आधार पंचतन्त्र है।

कथाओं से प्राप्त साक्ष्यों के विश्लेषण के आधार पर डा. फ्लीट कर मानना है कि इसकी रचना काल 11 वीं शताब्दी के आस-पास होना चाहिये। हितोपदेश का नेपाली हस्तलेख 1373 ई. का प्राप्त है। वाचस्पति गैरोला जी ने इसका रचनाकाल 14 वीं शती के आसपास माना है।

हितोपदेश की कथाओं में अर्बुदाचल (आबू), पाटलिपुत्र, उज्जयिनी, मालवा, हस्तिनापुर, कान्यकुब्ज (कन्नौज), वाराणसी, मगधदेश, कलिंगदेश आदि स्थानों का उल्लेख है, जिसमें रचयिता तथा रचना की उद्गमभूमि इन्हीं स्थानों से प्रभावित है।

### विद्या की आवश्यकता:

विद्या का अर्थ है 'शिक्षा और ज्ञान, विज्ञान और कौशल', ददाति का अर्थ है 'देना', और विनयम का अर्थ है 'विनम्रता'। विद्या निहित मूल्य, प्रबुद्ध और ज्ञानवर्धक के साथ ही जीवन के लिए उपयोगिता भी है। यह सत्य की खोज के लिए अनुशासित भक्ति है। यह मानव में सहिष्णुता, खुले दिमाग, पूर्वाग्रह से मुक्ति और नए विचारों के लिए दृष्टिकोण विकसित करता है। नम्रता, विचारों के प्रति श्रद्धा, हृदय में दया और दान, सांस्कृतिक समझ और सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व को आत्मसात करने के लिए, हमें जो चाहिए वह है विद्या। फलदार वृक्ष अपने फलों रूपी नम्रता से झुकता है, वैसे ही ज्ञानवान व्यक्ति भी दूसरों के सामने विनम्र रहता है। इस प्रकार विनम्रता से विद्या प्राप्त कर हम अपने समाज से गरीबी, बीमारी, अज्ञानता, निरक्षरता, अंधविश्वास, घृणा, क्रूरता, अन्याय, भय और उत्पीड़न जैसी बुराइयों को मिटाने में सक्षम होते हैं। जैसे-जैसे सभ्य दुनिया इन लक्ष्यों की खोज में आगे बढ़ती जा रही है, हमें भी बाकी दुनिया के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहिए। विद्या के इस पवित्र लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में हमें विनम्रता के साथ इस संस्था में काम करने व विद्या अर्जन के लिए गर्व की भावना और प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।





# Office of the Principal GOVERNMENT COLLEGE – GURUR

(Formerly Known as Government Naveen College Gurur)

DISTRICT – BALOD (C.G.), INDIA

Ph No : 07749 – 265461 Email : [gururgovernmentcollege@gmail.com](mailto:gururgovernmentcollege@gmail.com) Website : [www.gcgurur.org.in](http://www.gcgurur.org.in)

## (Motto)

विद्यां ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।  
पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मं ततः सुखम्॥

### **English meaning:**

VIDYA (Knowledge) gives humility, from humility comes eligibility, from eligibility (qualification) brings wealth, from wealth one attains righteousness and from righteousness one attains happiness.

### **History:**

The motto of the college has been taken from verse 6 of the ethics "Hitopadesh". The author of Hitopadesh is "Narayan Pandit". Hitopadesh are didactic stories influenced by the Indian mind and environment. The basis of the composition of Hitopadesh is Panchatantra.

On the basis of the analysis of the evidence obtained from the stories, Dr. Fleet believes that its composition should be around the 11th century. The Nepali handwriting of Hitopadesh is found in 1373 AD. Vachaspati Gairola has considered its composition around the 14th century.

Arbudachal (Abu), Pataliputra, Ujjayini, Malwa, Hastinapur, Kanyakubja (Kannauj), Varanasi, Magadhesh, Kalingadesh etc. are mentioned in the stories of Hitopadesh, in which the author and the origin of creation are influenced by these places.

### **Knowledge Required:**

VIDYA means 'education and knowledge, science and skill', DADATI means 'giving', and VINIYAM means 'humility'. Vidya has inherent value, enlightening and enlightening as well as utility for life. It is disciplined devotion to the search for truth. It develops tolerance, open mind, freedom from prejudice and attitude for new ideas in human beings. To imbibe humility, reverence for ideas, kindness and charity in the heart, cultural understanding and harmonious coexistence, what we need is Vidya. A fruit tree bows in humility to its fruits, so a wise man is humble before others. In this way by acquiring knowledge with humility, we are able to eradicate evils like poverty, disease, ignorance, illiteracy, superstition, hatred, cruelty, injustice, fear and oppression from our society. As the civilized world progresses in pursuit of these goals, we must also walk shoulder to shoulder with the rest of the world. To achieve this sacred goal of learning, we need to work in this institution with humility and a sense of pride and commitment to acquire Vidya.

